

काश !

मुझे
किसी ने
बताया होता !!



कमला भसीन

तस्वीरें
बिन्दिया थापर

काश !

मुझे
किसी ने
बताया होता !!

कमला भसीन

तस्वीरें
बिन्दिया थापर



इस पुस्तिका की प्रतियां जागोरी व बुक्स फॉर चेंज के कार्यालय से प्राप्त की जा सकती हैं।

प्रकाशक :



जागोरी

सी - 54 (ऊपरी मंजिल)

साउथ एक्सटेंशन - II, नई दिल्ली - 110049

दूरभाष : (91-11) 26257015, 26253629

ई मेल : <jagori@del3.vsnl.net.in>

वेबसाइट : www.jagori.org



बुक्स फॉर चेंज

बिना बिना, अमेरिका

बुक्स फॉर चेंज

सी - 75 (ऊपरी मंजिल)

साउथ एक्सटेंशन - II, नई दिल्ली - 110049

दूरभाष : (91-11) 51642348 - 51 (वि. 229 - 231)

ई मेल : <mani@actionaidindia.org>

© कमला भरीन

प्रथम संस्करण : 2003

मूल्य : पंद्रह रुपये मात्र

राज प्रेस, नई दिल्ली - 12 द्वारा मुद्रित

दूरभाष : 25832596, ई मेल : <rajpress@vsnl.com>

केवल सीमित वितरण के लिए



उम्र में अपने से बड़े बहुत से लोगों को तुम जानते और मिलते हो— जैसे तुम्हारे मामा, मामी, चाचा, चाची, बुआ, मौसी या तुम्हारे मां और पिताजी की सहेलियां और दोस्त, तुम्हारी बड़ी बहन या भाई की सहेलियां और दोस्त, तुम्हारे पड़ोसी, अध्यापक वगैरह।

बताओ, क्या उम्र में अपने से बड़े (जिन्हें हम बुजुर्ग भी कह सकते हैं) सब लोग तुम्हें अच्छे लगते हैं?

क्या तुम उन सब से मिलकर खुश होते हो/ होती हो? ज़रा सोचो और फिर बताओ।

जब तक तुम सोचते हो, मैं तुम्हें अपने बचपन के कुछ तज़ुर्बात (अनुभव) बताती हूँ।





सच कहूं तो— जब मैं छोटी थी, तब मुझे सब बुजुर्ग अच्छे नहीं लगते थे। कुछ ही बुजुर्ग थे जो मुझे सच में अच्छे लगते थे। ये वे लोग थे जो मुझ से प्यार और इज़्ज़त से पेश आते थे। इज़्ज़त से पेश आने से मेरा मतलब है, वे मुझे बुद्धू नहीं समझते थे। वे मुझ से यूँ बात करते जैसे मैं भी समझदार हूँ, अक्ल की बात कर सकती हूँ। जब मैं बात करती थी, वे ध्यान से सुनते थे।

वे मुझे छूते भी प्यार और आदर से थे। यानि वे ज़ोर से मेरे गाल नहीं नोचते थे। ज़बरदस्ती मुझे

अपनी तरफ़ नहीं खींचते थे। उनका छूना मुझे अच्छा लगता था। उनके स्पर्श से मुझे सुरक्षित होने का अहसास होता था। हालांकि मैं छोटी थी, वे मुझे एक शख्स या व्यक्ति समझते थे। आज भी ऐसे बुजुर्गों को याद करना मुझे अच्छा लगता है।



लेकिन, कुछ और बुजुर्ग थे जो मुझे नहीं भाते थे, क्योंकि वे गड़बड़ करते थे। मसलन वे ज़ोर से मेरे गाल खींचकर अपना प्यार जताते थे। मेरे गाल लाल हो जाते थे और मुझे दर्द होता था।

ऐसा प्यार मुझे बिल्कुल अच्छा नहीं लगता था और न ही इस तरह प्यार करने वाले मुझे भाते थे। मैं सोचती थी, कैसे अजीब लोग हैं! इन्हें ये भी नहीं पता कि ज़ोर से गाल खींचने से बच्चों को दर्द होता है।

सच कहूं तो कभी कभी मेरा दिल करता था कि मैं भी 'प्यार' से ऐसे लोगों के गाल नोचूं। शायद तब उन्हें पता लगता कि हम बच्चों को उनकी हरकतें कैसी लगती हैं।



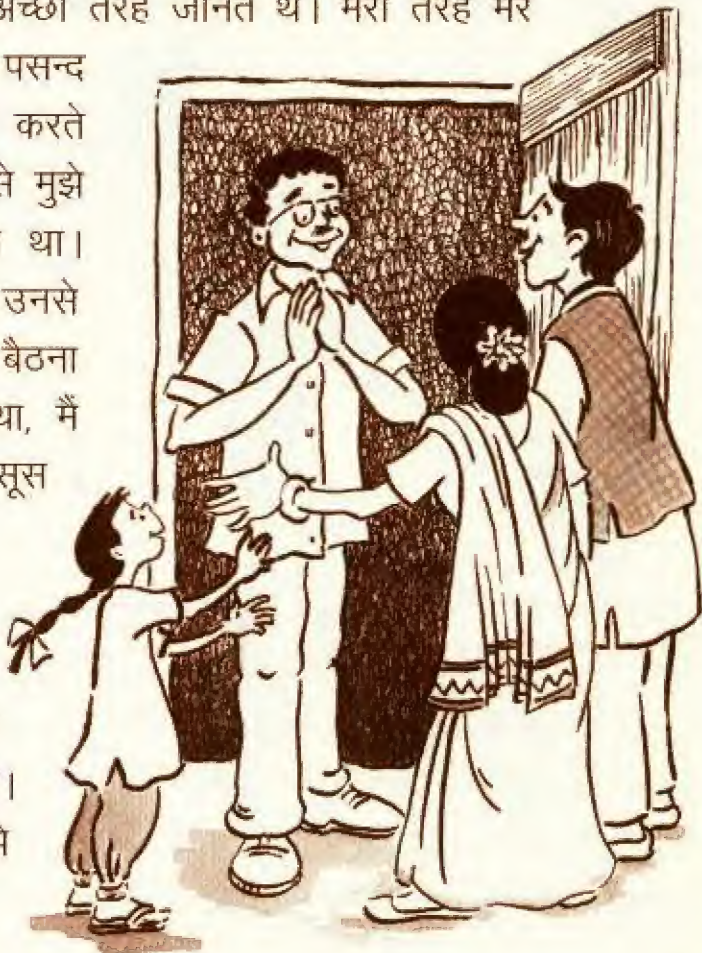
लेकिन मेरे बचपन में कुछ लोग थे, जो शुरू में मुझे बहुत पसन्द थे, पर बाद में मैं उनसे डरने लगी थी और उनसे दूर रहने की कोशिश करती थी, क्योंकि उन्होंने मेरे शरीर को ग़लत और बुरे ढंग से छुआ था।

ये लोग मेरे जैसे छोटे बच्चों का दिल जीतना जानते थे। वे मेरी पसन्द-नापसन्द समझने की कोशिश करते थे। मेरे नज़दीक आने और मेरा विश्वास जीतने के बाद इन्हीं लोगों ने मुझे कई बार जिस तरह छुआ और चूमा, उस से मैं बौखला सी गई। सब कुछ ठीक से समझ भी न सकी। उनकी हरकत नहीं समझी, अपनी प्रतिक्रिया भी नहीं समझी ठीक से, पर न जाने क्यों और कैसे मैं जानती थी कि अकेले में किये उनके स्पर्श ठीक नहीं थे। ग़लत थे, गन्दे थे। इसीलिए तो वे मुझे अकेले में ही उस तरह छूते थे, सब के सामने नहीं।



ये सब लोग मुझे से बहुत बड़े थे। कई तो 50-60 साल के थे। ये सब या तो रिश्तेदार थे, या परिवार के मित्र या अध्यापक या मेरी सहेलियों के पिता, भाई। इन सब को मेरे घर वाले अच्छी तरह जानते थे। मेरी तरह मेरे परिवार वाले भी इन लोगों को पसन्द करते थे और उनकी इज्जत करते थे। इन कारणों की वजह से मुझे इन लोगों पर विश्वास सा था। पहले उनके आसपास रहना, उनसे बातें करना, उनकी गोद में बैठना मुझे अच्छा तो लगता ही था, मैं उनके पास सुरक्षित भी महसूस करती थी।

मुझे याद है, मेरे बड़े भैया के एक दोस्त, जो मुझे अच्छे लगते थे, पर अकेले में मौका पा कर वे मुझे होठों पर चूमते। उनका इस तरह चूमना मुझे बुरा और ग़लत लगता था।





पिताजी के एक दोस्त मुझे प्यार करते थे। कई बार मुझे भींच कर आलिंगन करते थे। अकेले में अजीब तरह से मेरे जिस्म को अपने जिस्म के साथ लगाते, ज़ोर से चूमते। उनका इस तरह छूना मुझे बुरा लगता था। मैं उनसे दूर दूर रहने की कोशिश करती थी। वे मुझे अच्छे लगते थे, पर उनकी इन हरकतों से मैं डरने लगी।

मुझे इंगलिश पढ़ाने एक 70-75 साल के अध्यापक घर आने लगे। अकेले में पढ़ाते थे। अक्सर वे मुझे अपने बहुत नज़दीक बैठा कर होठों पर चूमने की कोशिश करते थे। उस वक्त उनका चेहरा अजीब सा हो जाता था। मैंने पिताजी से कई बार कहा मुझे उन से नहीं पढ़ना, पर पिताजी कह देते— “नहीं, नहीं, ये तो बहुत अच्छे टीचर हैं। पैसे भी नहीं लेते।” मेरी किस्मत से कुछ दिन बाद वे बीमार पड़ गए और उनका मुझे पढ़ाना बन्द हो गया। मैंने चैन की सांस ली।

एक दूर के रिश्तेदार थे, जो कभी कभी एक दो दिन के लिए हमारे घर आते थे। मुझे बहुत प्यार करते थे। मुझे भी वे अच्छे लगते थे। उनके घर आते ही मैं उनके चारों ओर मंडराने लगती थी। वे भी मुझे लिए लिए घूमते। हमारी अच्छी दोस्ती थी। एक दिन उन्होंने मुझे अपनी गोद में बैठा रखा था और मेरे साथ किताब पढ़ रहे थे। अचानक मैंने महसूस किया कि उन्होंने अपनी उंगली मेरी पैंटी में डाल दी। मैं एकदम उछल कर उनकी गोद से कूदी और भाग गई। अजीब सा डर और बौखलाहट रही मेरे मन में। उनकी इस हरकत ने मुझे बहुत दुख पहुंचाया। कहां तो वे मुझे इतने अच्छे लगते थे और कहां उनकी ये हरकतें? क्या इसीलिए प्यार करते थे वे मुझे? अब मैं उनके पास जाऊं, न जाऊं? वे तो मुझे पहले जैसे ही बुलाते थे, जैसे कुछ हुआ ही न हो, पर मैं अब डरती थी। मेरे दिमाग में कई सवाल मंडराते थे। जो शर्बस मुझे अच्छा लगता है, उसी ने मेरे साथ ये गलत व्यवहार कैसे और क्यों किया? उन पर शक करना या उनकी शिकायत करना भी मुझे शायद अच्छा नहीं लगा। ये बातें इतनी पुरानी हैं कि अब



मैं अपनी उस वक्त की बौखलाहट को ठीक से याद भी नहीं कर पा रही हूँ। मेरी एक सहेली थी सीमा। हम दोनों अपनी एक सहेली के घर खेलने जाती थीं। उसका भाई भी वहां आ जाता। हम सबको टॉफियां देता। वह सीमा को गोद में बैठा लेता। हम लोग खेलते रहते। एक दिन सीमा ने मुझे बताया कि वह उसे गोद में बैठा कर अपना लिंग उसके जिस्म के साथ रगड़ता है। उसके बाद हम डर गए। फिर कभी वहां खेलने नहीं गए।

मेरी एक और अच्छी सहेली थी। वह मेरे घर आती, मैं उसके घर जाती। घंटों हम एक दूसरे के साथ खेलते। मेरी सहेली के पिताजी कभी कभी हमारे साथ खेलते थे। मुझ से खूब बातें करते। मैं सोचती थी— और पिताओं से कितने फ़र्क और अच्छे हैं वे, पर एक दिन उन्होंने भी मुझे ग़लत ढंग से छुआ। इस बार तो मुझे बेहद परेशानी और दुख हुआ। उसके पिता की इस अजीब हरकत की



वजह से मुझे अपनी दोस्त के घर जाना छोड़ना पड़ा। मैं सोचती थी, क्या सब पुरुष जो मुझे अच्छे लगते हैं, लड़कियों के साथ यही कुछ करते हैं? उनसे यही चाहते हैं?

इस हादसे के बाद मेरे मन में अक्सर ये सवाल उठता था कि क्या मेरी सहेली के पिता अपनी बेटी को भी ग़लत ढंग से छूते होंगे? अगर हां, तो वह कैसे अपने पिता से बचेगी? मैंने तो उसके घर जाना छोड़ दिया, पर अपने पिता से बचने मेरी सहेली कहां जाएगी? यह सोचते सोचते मैं डर से कांप उठती थी। मन में फिर वही उलझन, वही बौखलाहट होती थी।



ये सारे अनुभव तब के हैं जब मैं पांच से दस साल की थी। मैं बच्ची थी पर जानती थी कि ये स्पर्श गन्दे थे और ग़लत थे। इस तरह छूने वाले लोग भी ठीक नहीं थे। वे



छोटी लड़कियों का ग़लत इस्तेमाल कर रहे थे। मेरे मन में यह सवाल उठता था कि अच्छे लगने वाले लोग ग़लत काम कैसे और क्यों करते हैं? मुझे तो अब अच्छे और बुरे का फ़र्क ही समझ नहीं आता था।



जब मैं बड़ी हुई तो मुझे पता लगा कि इस तरह का यौन शोषण सिर्फ लड़कियों के साथ ही नहीं होता। कुछ मर्द, लड़कों का भी यौन शोषण करते हैं। उन्हें भी इस्तेमाल करते हैं।

बच्चों का यौन शोषण करने वाले इन रिश्तेदारों, खानदान के दोस्तों, अध्यापकों को देखकर मुझे ऐसा लगता था जैसे कोई खूंखार जानवर भोली भाली गाय का मुखौटा लगा कर आ गया हो। घर के और लोग उनके असली चेहरे नहीं देख पाते थे। वे उन्हें अभी भी नेक समझते थे, पर मैं

उनके असली चेहरे देख चुकी थी। मेरे अन्दर बौखलाहट थी।



मुझे ठीक से कुछ समझ नहीं आता था। अपनी बात किसी को बता भी नहीं पाती थी। घर में मां पिताजी को क्या कहूं कैसे समझाऊं, समझ नहीं आता था। मेरे पास शब्द भी तो नहीं थे अपने अनुभव कहने को। किन शब्दों में बताती? क्या कहती? ऐसे लोगों से मैं सिर्फ डरती रही और उनसे बचने की कोशिश करती रही।

बहुत सालों तक मुझे इन मुखौटों वाले, खराब लोगों पर बहुत गुस्सा आता रहा। मैं अक्सर मन ही मन उनसे बदला लेने की तरकीबें सोचती रही। उन्हें सजा दिलवाने की योजनाएं भी बनाती रही।





जब मैं बड़ी हुई तब भी कई मर्दों ने मुझ से छेड़खानी करने की कोशिश की, मगर वे कामयाब नहीं हुए, क्योंकि अब मैं ज़्यादा होशियार थी। मैं सोचती हूँ, शायद मेरी

किस्मत अच्छी थी कि मैं इतनी बार बच गई। मुझे ज़्यादा शारीरिक नुकसान नहीं पहुंचा। मगर मानसिक परेशानी ने ज़रूर नुकसान पहुंचाया। आज मैं जानती हूँ कि घरों के अन्दर लड़कियों का बलात्कार तक हो जाता है और बलात्कार करने वाले रिश्तेदार, मां-बाप के दोस्त, पड़ोसी या अध्यापक होते हैं। कई बार तो खुद पिता अपनी बेटी का बलात्कार करते हैं।



ज़ाहिर है इन सब कड़वे अनुभवों की वजह से मेरे मन में एक डर सा बैठ गया। आज मैं समझती हूँ कि ये डर और शक मेरे दिल और दिमाग के लिए अच्छा नहीं था। हर डर और शक, बच्चों को नुकसान पहुंचाता है, खासतौर से तब, जब बच्चे अपने कड़वे अनुभवों और डर के बारे में किसी से बात नहीं कर पाते।



आज मुझे सबसे ज़्यादा दुख इस बात का लगता है कि इन लोगों के बारे में मैं किसी से बात नहीं कर पाई। अपने कड़वे अनुभवों के बारे में किसी को अपना हमराज़ नहीं बना पाई। न अपने परिवार में किसी को और न ही किसी दोस्त, अध्यापक या रिश्तेदार को।

मैं अक्सर अपने आप से पूछती हूँ कि मैं क्यों खामोश रही?

क्यों मैंने किसी को कुछ नहीं बताया? क्या इसलिए चुप रही क्योंकि इस तरह के अनुभवों के बारे में मेरे अपने विचार साफ़ नहीं थे? या इस यौन शोषण को बयान करने को मेरे पास शब्द नहीं थे? या मैं उन लोगों के बारे में शिकायत नहीं करना चाहती थी जो मुझे अच्छे भी लगते थे? क्या मुझे इस बात का डर

था कि मां पिताजी या मेरे भाई—

बहन मेरी बात नहीं मानेंगे? मुझ

पर ऐतबार नहीं करेंगे? उल्टा

मुझे ही डांटेंगे? एक बच्चे की

बात पर कौन ऐतबार करेगा?

जिन पर मैं दोष लगाती वे

ताक़तवर थे व औरों की नज़र

में वे नेक थे। एक बच्ची की

बात मानकर, क्या कोई उन

पर आरोप लगाने की हिम्मत

करता? आज मैं सोचती हूँ कि

क्या तब मेरे छोटे से दिमाग़ में ये

सब बातें आती थीं?



या, क्या मैं इसलिए खामोश रही क्योंकि मुझे ऐसा लगा कि शायद मैं ही कुसूरवार हूं, मुझमें ही कुछ ग़लत है, कुछ कमी है?

या मैं इसलिए नहीं बोली क्योंकि मुझे सिखाया गया था कि ऐसी बातें बताना, इन पर बात करना ग़लत है? अच्छे बच्चे ऐसी बातें नहीं करते?



मुझे आज भी नहीं मालूम मैं क्यों खामोश रही? क्यों एक नन्हीं सी जान इन अनुभवों पर बरसों पर्दा डाले रही? अपने छोटे से दिल और दिमाग में खामोशी का इतना बड़ा बोझ लिए घूमती रही?

क्यों ???

एक और दर्द भरा सवाल मेरे मन में आता है— मैं तो छोटी थी, अनजान थी, डर कर या बौखलाहट में खामोश रही। पर मेरी मां, पिताजी, बड़े भाई, बहन क्यों खामोश रहे? उन्होंने मुझे क्यों नहीं बताया कि कुछ लोग छोटी लड़कियों और लड़कों को ग़लत ढंग से छूते हैं, उनका इस्तेमाल करते हैं। उन्होंने मुझे अच्छे और ख़तरनाक स्पर्शों के फ़र्क के बारे में क्यों नहीं बताया?



वे सब तो बड़े थे। मुझ जैसे बच्चे नहीं थे। उन्हें तो इन बातों का पता रहा होगा। फिर उन्होंने मुझे समझाया क्यों नहीं? मुझे सावधान क्यों नहीं किया? क्या यह मुमकिन है कि बुजुर्गों को यह पता न हो कि बच्चों का यौन शोषण होता है?

मेरे घर वाले मुझे बहुत प्यार करते थे। इसके बावजूद उन्हें मेरे तज़ुर्बात का और मेरे डर और बौखलाहट का अन्दाज़ क्यों नहीं हुआ?

आज मैं यह भी सोचती हूँ कि मेरी मां, पिताजी, बड़ी बहन, बड़े भाइयों, मेरे अध्यापकों, दोस्तों में से किसी ने भी मेरे अंदर ऐसा ऐतबार क्यों नहीं जगाया कि मैं हर बात उन से कर सकती हूँ। मुझे उन से कुछ भी छुपाने की ज़रूरत नहीं है। मुझे ऐसा क्यों नहीं लगा कि मेरी बात पर ऐतबार किया जाएगा। मेरी उलझनें सुलझ जाएंगी?

परिवार के अन्दर ये दूरियां क्यों थीं? क्यों हम एक दूसरे के लिए अनजान थे? क्या सब परिवारों में इतनी दूरियां और ख़ामोशियां होती हैं?

हिम्मत करके एक बार मैंने अपनी सहेली से बात की तो उसने बताया— 'बचपन में मेरे पिता के एक दोस्त घर आया करते थे। पड़ोसी थे। वे अक्सर हम बच्चों को घुमाने ले जाते। एक दिन वे हमें एक सुनसान बिल्डिंग में ले गए। उन्होंने सब बच्चों को खाने के लिए टॉफियां दीं। मुझे अपनी गोद में बैठा कर वे लगातार अपना लिंग मेरी कमर के निचले हिस्से



पर रगड़ रहे थे। मुझे बड़ा अजीब और गंदा लग रहा था। मैं उठना चाह रही थी, पर वे मुझे जकड़ने की कोशिश कर रहे थे। मैं जोर से चीखकर अलग हो गई और रोने लगी। हम सब बच्चे भाग कर घर आ गए। मैंने अपनी मां को यह बात बताई। उन्होंने पिताजी को बताया। पिताजी ने कॉलोनी के लोगों की मदद से उस व्यक्ति को पुलिस के हवाले कर दिया।

यह सुनकर मुझे लगा, काश मैं भी अपने घरवालों को सब कुछ बता पाती।

अगर मेरे घर वाले मुझ से हर बात खुल कर करते, मुझे मेरे जिस्म और सेक्स के बारे में बताते, तो मैं सावधान रह सकती थी। ग़लत स्पर्श और ग़लत लोगों को पहचान सकती थी, उनका बेहतर मुकाबला कर सकती थी।

तब मैं भी ग़लत ढंग से छूने वालों के बारे में घर वालों को बता सकती थी। शायद तब



मां और पिताजी उन लोगों से बात कर पाते, उन्हें डांट पाते या उनका हमारे घर आना रोक पाते। उनके खिलाफ़ कुछ तो किया जा सकता था।

हो सकता है वे लोग और बच्चों को भी ग़लत ढंग से छूते रहे हों। औरों का भी यौन शोषण करते रहे हों, उन्हें सताते रहे हों। वे बच्चे भी शायद मेरी तरह ख़ामोश रहे हों।



हमारी ख़ामोशी ने कितनों का नुक़सान किया। कुसूरवारों को आज़ाद छोड़ दिया। उन्हें न सज़ा हुई, न अपने कुसूर के लिए कभी माफ़ी मांगनी पड़ी। हो सकता है मेरे बात करने से कुछ होता नहीं, पर कम से कम मेरी ख़ामोशी तो टूटती। बात करना तो शुरू होता।

अगर मेरे परिवार और स्कूल वालों ने ठीक से मुझ से सब पूछा और बताया होता तो मैं इतने सालों तक अकेले अपने राज़ लिए न घूमती। बरसों तक परेशानी, डर और गुस्सा मेरे अन्दर नहीं रहता। ये इतना बड़ा बोझ मेरे दिल और दिमाग़ से उतर सकता था।

अच्छा छोड़ो अब मेरी बातें। अपने बारे में मैंने बहुत कुछ कह दिया। अब तुम बताओ—

क्या तुम्हें कभी महसूस हुआ कि कोई तुम्हें ग़लत ढंग से देख और छू रहा है।

अगर हां, तो तुमने क्या किया?

क्या तुम भी मेरी तरह चुप रहीं / रहे? या तुमने किसी से बात की?

किस से बात की?

क्या तुम अपने परिवार में या अपने किसी रिश्तेदार, अध्यापक या किसी मित्र को सब कुछ बता सकती / सकते हो? क्या तुम्हारे घर वालों या अध्यापकों ने तुम्हें हर बात करने का हौसला दिया है?



अगर अपने जिस्म और सेक्स के बारे में तुम्हारे मन में कोई सवाल आता है तो क्या तुम किसी से पूछ सकती/सकते हो? किस से?

या तुम्हें यूं लगता है कि सेक्स गन्दी चीज़ है और उसके बारे में किसी से भी बात नहीं करनी चाहिए, न घर में, न स्कूल में?

क्या तुम्हारे घरवालों ने तुम्हारे बढ़ते, बदलते जिस्म और सेक्स के बारे में बात करने की पहल की? या तुम्हें कोई किताब दी जिसे पढ़कर तुम समझ सकें / सकीं?

या चालीस साल पहले मेरे परिवार में सेक्स के बारे में जैसी ख़ामोशी थी वैसी ख़ामोशी तुम्हारे परिवार में आज भी है?

आज, जब मैं बड़ी हो गई हूँ, मैं तो ये मानती हूँ कि परिवारों में दोस्ताना माहौल होना चाहिए। डर का, ख़ामोशी का माहौल नहीं होना चाहिए। बच्चों को ऐसा महसूस करवाना चाहिए कि वे बिना डरे कुछ भी पूछ सकते हैं, अपने मन के डर और उलझनें बता सकते हैं। बच्चों के मन में यह विश्वास जगाना चाहिए कि उनके सवालों, अहसासों, उलझनों, डरों को समझने की कोशिश की जाएगी। उन्हें बच्चा समझ कर, डांट-डपट कर बैठा नहीं दिया जाएगा। बच्चों के व्यक्तित्व और उनके विचारों की इज़्ज़त करना ज़रूरी है। खुले और प्रजातांत्रिक माहौल में बच्चों का अच्छा विकास होता है, न कि दबाव और डर के माहौल में।



मैं आज दो बच्चों की मां हूं और मैं यह भी मानती हूं कि सब विषयों पर खुल कर बात करना ज़रूरी है। कोई भी विषय गंदा नहीं है। सेक्स भी नहीं। हाँ, सेक्स के बारे में कुछ लोगों के ख्याल गन्दे हो सकते हैं। पर सेक्स गन्दी या ख़राब नहीं है। मुझे लगता है, हमारे परिवार वाले, परिवार के दोस्त या हमारे अध्यापक, बहुत आसानी से हमें समझा सकते हैं। वे हमें बता सकते हैं किस तरह के स्पर्श ठीक हैं, किस तरह के ग़लत। वे हमें बता सकते हैं कि कुछ लोग बच्चों का यौन शोषण करते हैं।



कुछ लोगों का मानना है कि बच्चों को सेक्स के बारे में जानकारी देने से उनके दिमाग पर ग़लत असर पड़ता है।

पर सच तो यह है कि अगर हम सही तरीके से बच्चों को उनके शरीर और सेक्स के बारे में जानकारी दें तो वे अपने आप को बेहतर समझ सकते हैं। बिना जानकारी के जो ग़लत विचार या धारणाएं बच्चों के मन में पैदा होती हैं, वे ख़त्म हो सकती हैं। जिस्म और सेक्स के बारे में बात करने से डर कम या ख़त्म होते हैं, बढ़ते नहीं हैं और यह ग़लत धारणा भी ख़त्म हो जाती है कि सेक्स के बारे में बात करना ग़लत या नुकसान पहुंचाने वाला है। अगर सेक्स ज़िन्दगी का एक हिस्सा है तो उस पर बात करना कैसे ग़लत हो सकता है?

कुछ लोगों का मानना है कि बच्चों के सामने ऐसी बातें नहीं करनी चाहिए जिनसे उनके मन में किसी भी तरह की चिंता या डर बैठे।

पर मैं समझती हूँ कि बच्चों को अगर सही ढंग से जानकारी दी जाएगी तब उनके मन में संशय या डर बैठने की जगह, डर भाग खड़ा होगा। बात करने से बच्चों की हिम्मत बढ़ती है और बुजुर्गों के साथ उनके दोस्ताना रिश्ते बनते हैं। बच्चे ज़्यादा सजग भी होते हैं।

कुछ लोग यह भी कहते हैं कि अगर किसी लड़की के साथ कुछ ग़लत होता है तो हमें ख़ामोश रहना चाहिए। इस बारे में दूसरों को बताने से या इस पर बात करने से लड़कियों की बदनामी होती है।

लेकिन, मेरा मानना है कि बात करने से लड़की की बदनामी नहीं होती या नहीं होनी चाहिए।

बदनामी तो उनकी होनी चाहिए जो लड़कियों/ बच्चों के साथ ग़लत सुलूक करते हैं। ऐसे लोग मुजरिम हैं और हमें उनके जुर्म का खुलासा करना चाहिए। ख़ामोश रह कर हम अपने बच्चों के लिए ख़तरे बढ़ा देते हैं।



तुम बताओ, तुम्हारा क्या विचार है? खुलकर बातचीत होनी चाहिए या नहीं?
हमारा मानना है कि अगर तुम्हारे मन में कोई सवाल है या कोई डर है तब तो ज़रूर बात करनी चाहिए – किसी से भी – जिस पर तुम्हें भरोसा है, जो तुम्हें अच्छी लगती/लगता है। यह व्यक्ति कोई भी हो सकता है— मां, पिताजी, भाई, बहन, कोई और रिश्तेदार, दोस्त या अध्यापक।

बातचीत करने से समझ और विश्वास बढ़ता है और डर कम हो जाता है। मन की गांठें खुल सी जाती हैं।

जैसे खिड़की, दरवाज़े खोलने से बन्द कमरे में रोशनी, हवा और ताज़गी आती है उसी तरह बन्द मन और दिमाग को खोलने से ताज़गी आती है, हिम्मत आती है।

किसी से मन की बात करने से दोस्त भी बनते हैं। बुजुर्ग भी बच्चों के दोस्त बन सकते हैं।

अगर तुम अपने मन की बात किसी से करोगे तो वे भी शायद तुम्हारे सामने अपना मन खोलें। हो सकता है वे भी किसी से बात करना चाहते हों, उन्हें भी दोस्त और दोस्ती की तलाश हो।

बोलो, क्या ख़याल है?

हो जाए बातचीत, बनें जाएं दोस्त
और
बढ़ जाए रोशनी और हिम्मत!





